तरह अपने कामांगकी तृप्ति करें। इसमें कोई दोष वाली बात नहीं है। बात तो इस वेश–भूषा की है। अत: मुंह मे रामए बगल में छुरीष वाली बात तो न करें। और जो महात्मा की वेश–भुषा पहन कर सब पर हकूमत करना चाहते हैं।एवे सज्जन भी इस पवित्र गुरू ज्ञान यानी अध्यात्म पद को नष्ट–भ्रष्ट न करे। क्योंकि यह मार्ग तो प्रेम का है। अत: जहां तक हों सके सबसे प्रेम करें। पहले तो राजा का लडका ही राजा बनता था। अब तो सबके लिए द्वार खुला है। आप चुनाव जीत कर राजनेता बनो और जिसको दबाना हो दबाओ. जिसको मरवाना हो मरवाओ,जिसको जेल भेजना है भेजो जब दूसरों का नम्बर आयेगा तब आपके साथ भी वही होगा जो आप दूसरों के साथ करेंगे। जब आप सब भोग कर उपराम हो जावें तब सन्यास लेकर यह गुरू. पीर तथा महात्मा की वेश–भूष पहनना अच्छा होगा।

महात्माओं से प्रार्थना करने का कारण

अब प्रश्न यह उठता है कि मैं महात्माओं को यह ज्ञान क्यों दे रहा हूं? क्या मैं अहंकारी हूं? या महात्मा सज्जनों को इस ज्ञान से अनजान समझता हूं? पूज्य महापुरूषो इसका एक कारण तो मैंने पहले लिख ही दिया है। दूसरी बात यह है कि पूरी दुनिया के महापुरूष जो मनुष्यता को सुख शान्ति से जीने का ज्ञान दे रहे हैं,वे इस मानवता धर्म वाली बात समझ कर आज के समय की नई व आसान अनुभव की विधि का प्रयोग करके अपने जीवन को परम सुख और परम शान्तिमय बनाते हुए पहले तो उस अनुभव का सुख व आनन्द आप स्वयं अभी इसी जीवन में अनुभव करें और धर्म के नाम पर विश्व के सभी सम्प्रदायों को एक नाम देकर,धर्म–कर्म में जो भिन्नता है इसको हटा कर. मानवता धर्म के नाम से सबकों एक ही नाम से समझें। क्योंकि आज बुध्दि विज्ञान का युग है। सभी धर्म सम्प्रदायों का परमात्मा एक ही है। परन्तु अलग–अलग समय. भाषा. देश व क्षेत्र के विचार से किसी ने उसे भगवान कहा, किसी ने खुदा कहा, किसी ने God कहा तो किसी ने कुछ और कहा। वास्तव में यह सब नाम उस एक ही शक्ति के हैं और सब मनुष्य उसी के ही बच्चे हैं। खेल सब विश्वास का है। आत्मा भी सबकी एक जैसी है। यह नहीं है कि हिन्दु की आत्मा और है और मुसलमान व ईसाइ की और है। फिर धर्म के नाम से यह लडाई–झगडा क्यों हो? आज समय बदल गया है और सभी बुध्दिमान सज्जन इस बात को समझते है। अत: ये दुनिया के गुरू,पीर इस बात को समझें और